25

तूफ़ान के बीच की शांति

(7:1-8)

मैं और मेरी पत्नी ओक्लाहोमा शहर के रास्ते में थे कि तूफ़ान आ गया। सड़क पर एक मिनट के फासले पर आगे सूखा था और उसके बाद हम बारिश से भीग रहे थे। बिजली चमक रही थी और बादलों की गर्जन इतनी भयंकर थी कि लग रहा था, जैसे यह हमारी कार पर अब गिरी और तब गिरी। विंडशील्ड में से झांकता हुआ रास्ता देखने के लिए मैं आगे की ओर झुका। तूफ़ान बढ़ता ही जा रहा था, जिससे कार चलाना कठिन हो गया। मैंने राजमार्ग के एक ओर कार खड़ी करने की सोची ही थी कि हम तूफ़ान से बाहर निकल आए। अचानक आसमान साफ़ था और खिड़कियों में से धूप दिखाई दे रही थी। उसके आगे गरजते बादल और चमकती बिजली थी; यानी रास्ते में तूफ़ान अभी आने थे, परन्तु यहां मौसम शांत लग रहा था। कम से कम कुछ देर के लिए ही सही हम सुरक्षित थे।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की हमारी यात्रा भी कुछ ऐसा ही अनुभव है: अध्याय 6 के तूफ़ानों से निकलकर हम अध्याय 7 की चमकती धूप में आ जाते हैं। आगे अभी तूफ़ान हैं, परन्तु अभी के लिए यहां शांति है।

अध्याय 7 के दृश्य उन लोगों के लिए हैरान करने वाले हो सकते हैं, जिन्हें मूल में प्रकाशितवाक्य पढ़कर सुनाया गया था। पहली छह मुहरें जल्दी-जल्दी खोली गई थीं। सुनने वालों को उम्मीद होगी कि इसके बाद सातवीं मुहर खुलेगी; परन्तु उस तक (8:1 में) पहुंचने से पहले हमें वह मिलता है, जिसे टीकाकार ''अन्तराल'' या ''कोष्ठक'' कहते हैं: 1,44,000 और सिंहासन के आस-पास अनगिनत भीड़ पर सांकेतिक मुहर।[1]

अधिकतर टीकाकार इस बात से सहमत हैं कि अध्याय 7 क्रम के अनुसार अध्याय 6 के बाद नहीं आता है यानी यह कि यूहन्ना का उद्देश्य घटनाओं को क्रमबद्ध लिखना नहीं था। हमें कई संकेत मिलते हैं कि अध्याय 7 की घटनाएं छठी मुहर की घटनाओं से पहले और शायद पहली मुहर से भी पहले घटीं:

पांचवीं मुहर में शहीद होने वाले लोग बदले की पुकार कर रहे थे, परन्तु उन्हें बदला मिलने के लिए ''थोड़ी देर'' रुकने को कहा गया था (6:11)। यह बात कि बदला बाद में छठी मुहर के खुलने पर मिलना था, सुझाव देता है कि पांचवीं और छठी मुहर के दृश्यों के बीच समय का एक काल (''थोड़ी देर'') बीत गया। अध्याय 7 की घटनाएं उस काल से मेल खाती हो सकती हैं।

अध्याय 7 के आरम्भ में, चारों स्वर्गदूतों को ''पृथ्वी को *हानि*'' तब तक न पहुंचाने

के लिए कहा गया, जब तक परमेश्वर के दासों पर मुहर नहीं हो जाती (7:3)। परन्तु अध्याय 6 में लाल घोड़े के सवार ने ''*पृथ्वी पर से* मेल'' को उठा लिया (6:4) और पीले घोड़े के सवार को ''*पृथ्वी की* एक चौथाई पर यह अधिकार दिया गया कि तलवार, और अकाल, और मरी और पृथ्वी के वन पशुओं के द्वारा लोगों को मार डाले'' (6:8ख)। यह बात कि ''पृथ्वी'' की ''हानि'' चार सवारों ने आरम्भ की, सुझाव देता है कि अध्याय 7 में मुहर लगाना घुड़सवारों के सवारी करने से पहले हुआ।

अध्याय 7 वाली चारों हवाएं अध्याय 6 वाले चारों घुड़सवारों जैसी समस्याएं हो सकती हैं। जे.डब्ल्यू.रॉबर्ट्स मानते थे कि ऐसा ही था:

> कि ये [चारों] हवाएं केवल पहली चार मुहरों के चार घुड़सवारों का एक और संकेत हैं, अपोकलिप्स के सबसे निश्चित परिचयों में से एक लगता है। जकर्याह वाले दर्शन में, जिसमें अपोकलिप्स निरन्तर बनाया जाता है, चार घुड़सवारों को आकाश की चारों हवाएं कहा गया है (जकर्याह 6:5)।[2]

यदि रॉबर्ट्स की बात सही थी तो अध्याय 7 में वर्णित मसीही लोगों पर मुहर लगाना निश्चय ही पहली मुहर खुलने से पहले हुआ।

ऊपर दिए गए विवरण को ध्यान में रखते हुए, इस पाठ में हम अध्याय 7 की घटनाओं को सकारात्मक मानते हुए ऐसे विचार करेंगे, जैसे वे अध्याय 6 की भयानक घटनाओं से पहले हुए हों।[3]

इससे हमारे मन में प्रश्न आता है, ''यदि ऐसा है, तो अध्याय 7 में दृश्यों को विवरण में पहले क्यों नहीं दिया गया?'' कई सम्भावित कारण दिए जा सकते हैं: शायद इसकी सामग्री नाटकीय प्रभाव को पाने के लिए तैयार की गई थी। अध्याय 6 की तुलना एक धमाकेदार शोर बनाने वाले शास्त्रीय संगीत के पद से की जा सकती है। फिर जब लगे कि हमारी समझ यहां टिक नहीं सकती, तो हमारे कानों का स्वागत एक राहत देने वाले पद्य अर्थात सुरीले सुर से होता है जो फिर से तनाव बनने से पहले मन को शांत कर देता है।

एक और सम्भावित व्याख्या यह है कि अध्याय 7 अध्याय 6 से उपजे प्रश्नों का उत्तर देता है। अध्याय 6 में दिखाई गई त्रासदी विशेषकर संसार के विनाश के (सांकेतिक) चित्र के बाद यूहन्ना के पाठकों का स्वाभाविक प्रत्युत्तर होना था, ''परन्तु मसीही लोगों का क्या हुआ? हमारा क्या होगा, जब हम पर ये बातें होगी?'' अध्याय 7 इसका उत्तर देता है।

अध्याय 7 में दो दृश्य दिखाए गए हैं: 1,44,000 पर मुहर (आयतें 1-8) और सिंहासन के आस-पास लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ (आयतें 9-17)। इस पाठ में हम 1,44,000 पर और अगले पाठ में उस बड़ी भीड़ पर चर्चा करेंगे।

परमेश्वर ने पूर्व प्रबन्ध का वचन दिया है: वह अपने लोगों का पक्ष लेता है (7:1-3)

अध्याय 7 का आरम्भ, ''इसके बाद ...'' (आयत 1क) से होता है। '''इसके बाद'

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में किसी नये विषय या विचार की नई रेखा के लिए इस्तेमाल की गई यूनानी अभिव्यक्ति है।''[4] प्रेरित ने कहा ''इसके बाद मैंने पृथ्वी के चारों कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े देखे, वे पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे हुए थे, ताकि पृथ्वी, या समुद्र, या किसी पेड़ पर, हवा न चले'' (आयत 1)। (पृथ्वी की चारों हवाओं को पकड़े हुए चार स्वर्गदूत का चित्र देखें।)

पूरी पुस्तक में हम स्वर्गदूतों को परमेश्वर की योजना को पूरा करते देखते हैं। कुछ को तो स्पष्टतया विशेष कार्य दिए गए थे: एक को ''आग पर अधिकार'' था (14:18) जबकि एक और ''पानी का स्वर्गदूत'' था (16:5)। अध्याय 7 में परमेश्वर ने चारों स्वर्गदूतों का इस्तेमाल ''पृथ्वी की हवाओं'' को नियन्त्रण में रखने के लिए किया।[5] याद रखें कि चार ''वैश्विक अंक'' (सृष्टि का अंक) है और प्रकाशितवाक्य में इसका इस्तेमाल आमतौर पर सारी मनुष्यजाति के लिए हुआ है।[6]

चारों स्वर्गदूत ''पृथ्वी के चारों कोनों पर खड़े'' (आयत 1ख) थे: एक पूर्व में जबकि दूसरे पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि '''पृथ्वी के चारों कोनों' वाक्यांश उतना 'अवैज्ञानिक' नहीं है, जितना यह यशायाह 11:12 में[7] या दैनिक समाचार पत्र में।''[8] ''अब्राहम से बहुत पहले 'पृथ्वी के चारों कोनों' शब्द का इस्तेमाल विश्वव्यापकता का संकेत था।''[9]

चारों स्वर्गदूत ''पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे हुए थे, ताकि पृथ्वी, या समुद्र, या किसी पेड़ पर, हवा न चले''[10] (आयत 1ग)। ये हवाएं ''पृथ्वी और समुद्र की'' (आयत 2ख) और ''पेड़ों की हानि'' (आयत 3ख) करने के लिए बनाए गए विनाश के माध्यम थे। पवित्र शास्त्र में कई बार भयंकर हवाओं को परमेश्वर के क्रोध का प्रतीक बताया गया है;[11] यहां वे पृथ्वी पर छोड़ जाने को तैयार आतंक का प्रतीक हैं। यह बात कि चारों हवाएं चारों दिशाओं से आनी थीं ''हर दिशा से समस्या'' के विचार को सीमित कर देती है। अपने मन में इस दृश्य की कल्पना करते हुए, तेज भंवर वाली आंधी को जंगली जीवों की तरह छूटने के लिए संघर्ष करते देखें!

फिर यूहन्ना ने ''एक और स्वर्गदूत को जीवते परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूर्व से ऊपर की ओर आते देखा'' (आयत 2क)। यहूदी विचार में परमेश्वर के अनुग्रहकारी प्रदर्शन पूर्व से जुड़े हुए थे: स्वर्गलोक पूर्व में ठहराया गया था (उत्पत्ति 2:8), परमेश्वर का तेज़ मन्दिर में पूर्व से आता था (यहेजकेल 43:2) और मसीहा के पूर्व से आने की उम्मीद थी।[12] पूर्व से आना इस बात का संकेत था कि स्वर्गदूत परमेश्वर की ओर से *आशा* का संदेश ला रहा था।

इस स्वर्गदूत के पास ''जीवते परमेश्वर की मुहर'' थी[13] (आयत 2ख)। ''पूर्व के राजाओं की विशेष मुहरें होती थीं, जिनसे उनकी सम्पत्ति चिह्नित और उनकी रक्षा की जाती और कानूनी दस्तावेज़ों को मान्यता दी जाती थी।''[14] आमतौर पर ये मुहरें अंगूठी पर उकरी होती थीं (देखें उत्पत्ति 41:42; एस्तेर 3:10; 8:2), परन्तु वे मुट्ठियों वाली धातु की मुहरें भी हो सकती थीं।

मुहर वाले स्वर्गदूत ने ''ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा, जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें'' (आयतें 2घ, 3क)। ''दासों'' वही शब्द है, जो प्रकाशितवाक्य के आरम्भ में मिलता है (1:1)।[15] परमेश्वर के सब लोगों के लिए इस्तेमाल होने पर इसका अर्थ विशेष रूप से उस समय सताए जाने वाले मसीही लोगों के लिए था।

परमेश्वर को अपने लोगों की चिंता थी यानी वह कह रहा था, ''आतंक पर तब तक नज़र रखो, जब तक मेरे लोग तैयार नहीं हो जाते!''[16] बाइबल की महान सच्चाइयों में से एक यह है कि परमेश्वर अपने लोगों का पक्ष लेता है! मुझे गलत न समझें, क्योंकि उद्धार के मामले में ''परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता'' (प्रेरितों 10:34ख, 35; गलातियों 3:28 भी देखें)।[17] परन्तु जब कोई व्यक्ति विश्वास से और आज्ञा पालन के द्वारा प्रभु की बात मानता है तो वह परमेश्वर के पसंदीदा लोगों में से एक हो जाता है![18]

उत्पत्ति 6:8 में हम पढ़ते हैं कि ''यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।'' मूसा, शमूएल, दाऊद , मरियम और यीशु के लिए भी यही बात कही गई (निर्गमन 33:12; 1 शमूएल 2:26; प्रेरितों 7:46; लूका 1:30)। बुद्धिमान ने लिखा है, ''भले मनुष्य से तो यहोवा प्रसन्न होता है'' (नीतिवचन 12:2क), और भजनकार ने लिखा है, ''यहोवा अपने डरवैयों ही से प्रसन्न होता है'' (भजन संहिता 147:11क)। इससे बिल्कुल मेल खाता पद 1 पतरस 2:20ख में मिलता है: ''पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है'' ![19]

मसीही बनने पर आप परमेश्वर के *विशेष लोग* बन जाते हैं[20] और आपके जीवन पर आक्रमण करने वाली समस्याएं आपको किसी प्रकार कम विशेष नहीं बनातीं। वास्तव में विश्वास के साथ उन समस्याओं का सामना करने पर आप प्रभु के लिए और भी विशेष हो जाते हैं (यदि ऐसा हो सकता है)!

परमेश्वर के पास सुरक्षा की एक मुहर है: वह अपनों की देखभाल करता है (7:2-4)

परमेश्वर अपनी पसंद के लोगों के लिए क्या *करता* है? आगे दिया उत्तर ध्यान से पढ़ें क्योंकि हमारे पाठ का मुख्य संदेश यही है।

वचन के इस भाग में मुख्य शब्द ''मुहर'' है: पूर्व से आने वाले स्वर्गदूत के पास ''जीवते परमेश्वर की मुहर'' थी (आयत 2)। उसने चारों स्वर्गदूतों को पुकारकर कहा कि जब तक ''परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर'' (आयत 3) नहीं लग जाती ''तब तक पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को हानि न'' पहुंचाएं। (परमेश्वर के दासों पर मुहर लगाते हुए एक स्वर्गदूत का चित्र देखें।) उनके बारे में हम पढ़ते हैं ''इस्राएल की सन्तानों के सब गोत्रों में से एक लाख चौआलीस हज़ार (जिन) पर मुहर दी गई'' (आयत 4)। इस्राएल के बारह गोत्रों के नाम दिए गए हैं और प्रत्येक गोत्र में ''बारह हज़ार पर मुहर दी गई थी'' (7:5-8)।

अध्याय 5 में सात मुहरों वाली पत्री का अध्ययन करते हुए हमने मुहर का महत्व देखा

था। हमने ज़ोर दिया था कि मुहर के तीन उद्देश्य होते थे:

(1) स्वामित्व की पुष्टि करना (श्रेष्ठ गीत 8:6)

(2) प्रामाणिकता सिद्ध करना (एस्तेर 3:12), और

(3) सामान की रक्षा करना (मत्ती 27:66)।

प्रकाशितवाक्य 7 में ''जीवते परमेश्वर की मुहर'' ने तीनों उद्देश्यों को पूरा किया। इससे पता चला कि दास परमेश्वर के लोग हैं। परमेश्वर के दासों के अलावा और किसी पर मुहर नहीं की गई; इस प्रकार मुहर से प्रामाणिकता सिद्ध हुई। परन्तु प्रकाशितवाक्य 7 में ज़ोर *सुरक्षा* पर है। दासों को आने वाली आपदाओं से बचाने के लिए उन पर मुहर की गई थी।[21] प्रकाशितवाक्य 9 में देखा जा सकता है कि वे किस प्रकार सुरक्षित *थे,* जहां नरक की टिड्डियों को उन लोगों को हानि पहुंचाने की अनुमति दी गई थी, ''जिनके माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं है'' (आयत 4)।

यहेजकेल 9:2-6 में इसका समानांतर मिल सकता है, जिसमें परमेश्वर ने अधर्मियों को दण्ड देने के लिए यरूशलेम में छह जल्लादों को भेजा। उन छह के साथ ''लिखने की दवात लिए हुए एक और पुरुष था'' (आयत 2)। इस आदमी से कहा गया कि ''इस ...नगर के भीतर इधर-उधर जाकर जितने मनुष्य ... सांसें भरते और दुख के मारे चिल्लाते हैं उनके माथों पर चिह्न लगा दे'' (आयत 4)। उसने निर्दोष लोगों की पहचान एक विशेष चिह्न से करनी थी। उसके बाद, जल्लादों ने यरूशलेम में जाकर ''बूढ़े, युवा, कुंआरी, बाल-बच्चे, स्त्रियां'' (आयत 6क) तरस किए बिना सब को काट डाला। ''परन्तु,'' परमेश्वर ने आज्ञा दी कि ''जिस किसी मनुष्य के माथे पर वह चिह्न हो, उसके निकट न जाना'' (आयत 6ख)। जैसे यहेजकेल वाले दर्शन में विश्वासियों को बचाने के लिए चिह्न[22] था वैसे ही यूहन्ना के दर्शन में मुहर से विश्वासियों की रक्षा हुई।

लोगों पर मुहर लगाने की बात आपको अजीब लग सकती है। मुहर आमतौर पर, *वस्तुओं* पर लगती थी,[23] परन्तु यहां *लोगों* पर मुहर लगाई गई थी। परन्तु आत्मिक रूप में मुहर लगने का विचार उस समय मसीही लोगों में प्रचलित अवधारणा थी और अब भी होनी चाहिए। बपतिस्मा लेने वाले व्यक्ति को दान के रूप में पवित्र आत्मा मिलता है (प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 5:32 भी देखे; गलातियों 4:6) और इस आत्मिक सौदे को ''मुहर लगना'' कहा गया है। पौलुस ने लिखा है कि ''जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है''(इफिसियों 1:13ख, 14क; इफिसियों 4:30; 2 कुरिन्थियों 21, 22 भी देखें)।

यह बात कि पवित्र आत्मा हम में वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16; 2 तीमुथियुस 1:14) स्वामित्व और सही होने का संकेत है (रोमियों 8:9), परन्तु यह विशेषकर परमेश्वर के जारी रहने वाले आवश्यकता अनुसार किए जाने वाले प्रबन्ध की बात है (रोमियों 8:11, 26)।[24] पहली शताब्दी के मसीही लोगों से लेकर आज तक के सब मसीही लोगों पर मुहर की गई है यानी उन्हें परमेश्वर की ओर से सुरक्षा दी गई है!

इससे हम पाठ में मुख्य भाग में आ गए हैं कि उनकी सुरक्षा *किस अर्थ में* हुई? क्या मुहर लगने से उनके शरीर तीरों, भालों और तलवारों के लिए अभेद्य हो गए? क्या मुहर लगने से उनकी गर्दनें चकमक जैसी कठोर हो गईं कि जल्लादों की कुल्हाड़ियां भी उन पर से फिसल जाती थीं? क्या मुहर लगने से वे अग्निरोधक हो गए कि उन्हें आग की भूखी लपटों द्वारा उनके शरीरों को चाटने पर कोई गरमी का अहसास न हुआ? प्रश्न को और स्पष्ट करते हुए, क्या मुहर लगने से आज मसीही लोग घातक बीमारियों, जिसमें कैंसर भी है, से मुक्त हो जाते हैं? क्या मुहर लगने का अर्थ यह है कि हमारा घातक एक्सीडेंट नहीं होगा? क्या मुहर लगने से हम आर्थिक तंगी से स्वत: उबर आते हैं? क्या हम में से किसी को बुढ़ापे में अपमान नहीं सहना पड़ेगा? क्या विश्वासी मसीही लोगों को परिवार के टूटने का दर्द कभी नहीं मिलेगा?

इन प्रश्नों के उत्तर सब को मालूम हैं। वचन और मानवीय अनुभव दोनों से पता चलता है कि मसीही व्यक्ति पर जीवन की उन सभी समस्याओं के अलावा वे समस्याएं भी आती हैं, जो परमेश्वर के लोगों के लिए सहनी आवश्यक है।[25] अब तक अपने अध्ययन में, एक के बाद एक अध्याय में हमने मसीही लोगों पर आने वाले कष्ट को देखा है (1:9; 2:10, 13; 3:10; 6:4, 6, 8-11)। हम फिर पूछते हैं ,''मुहर से परमेश्वर के विशेष लोगों की सुरक्षा *किस अर्थ में* होती है?''

मेरा मानना है कि इसका उत्तर मुहर की *स्थिति* में मिलता है: ''जब तक हम अपने परमेश्वर के *दासों के माथे पर* मुहर न लगा दें, ...'' (आयत 3; 9:4; 14:1; 22:4भी देखें)। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर के स्वीकृत लोगों के माथों पर ईश्वरीय चिह्न[26] लगा है। बाद में हम पढ़ेंगे कि पशु की पूजा करने वालों ''के माथे पर एक-एक छाप करा दी'' गई थी (13:16; देखें 14:9; 20:4)।[27] विश्वासियों के माथे पर एक बड़ी सी सफेद मुहर और अविश्वासियों के माथे पर गंदा सा पीला चिह्न होता तो इससे सहायता मिल सकती थी, परन्तु ऐसा नहीं है।

तो फिर इस बात का क्या महत्व है कि मुहर ''उनके माथों पर'' थी? अधिकतर टीकाकार इस विवरण को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। यदि वे इसका उल्लेख करते भी हैं तो माथे के महत्व पर ज़ोर देते हैं या यह कि माथा चेहरे का दिखाई देने वाला भाग है। मेरा मानना है कि राबर्ट मुल्होलैंड ने प्रतीक के महत्व को समझ लिया जब, उन्होंने माथे को '' *बोध* का स्थान '' कहा।[28] जब आप और मैं *अपने माथे पर हाथ मारते हैं* तो उससे किसे संकेत जाता है? दिमाग को। मैं यह मानता हूं कि परमेश्वर का लोगों के ''माथों पर'' मुहर लगाना इस बात का संकेत था कि परमेश्वर ने उनके *मनों* और हृदयों में अपनी सुरक्षा दे दी है।

(*प्रिय पाठक, मुझे इस बात पर जोर देने में सहायता करें: चर्चा में आगे जब भी आप "TYF" देखें तो रुककर अपने माथे पर हाथ मारें। अब पिछला पद फिर से पढ़ें, जहां भी तिरछा या इटेलिक किया हुआ शब्द मिले उसे पढ़ने के बाद अपने माथे पर हाथ मारें और फिर अगला भाग पढ़ना जारी रखें।*)

परमेश्वर का लोगों के माथों पर मुहर लगाना और उस पशु के मानने वालों के माथों और हाथों पर चिह्न लगाना मुझे व्यवस्थाविवरण 6 का ध्यान दिलाता है। वहां पर इस्राएलियों को बताया गया था, ''ये आज्ञाएं ... तेरे मन में बनी रहें; ... और इन्हें अपने हाथ पर चिह्न के रूप में बांधना और ये *तेरी आंखों के बीच* टीके का काम दें'' (आयतें 6-8)। यहूदियों ने इस आज्ञा का अर्थ अक्षरश: ले लिया और अपने हाथों और माथों पर छोटी-छोटी डिब्बियां बांध लीं जिनमें छोटी-छोटी आयतें होती थीं।[29] परन्तु अधिकतर लोग इस बात को समझते हैं कि महत्वपूर्ण वाक्यांश ''तेरे *मन* में'' है और यह कि माथे और हाथों पर परमेश्वर का वचन ''बांधने'' का अर्थ यह था कि यदि वचन उनके मनों में हो तो उनकी *सोच* (TYF) और उनके काम काबू में रहेंगे। इसी प्रकार विश्वासियों और अविश्वासियों के माथों पर मुहर का चिह्न इस बात का संकेत था कि उनकी सोच (TYF) प्रभावित हुई थी!

मेरी बात को गलत न समझें। परमेश्वर के वचन को जानने वाले हर व्यक्ति को मालूम है कि परमेश्वर ने अपने लोगों की ओर से व्यक्तिगत और सक्रिय रूप से हस्तक्षेप करने की प्रतिज्ञा की है। उसने हमें अतिरिक्त अंदरूनी शक्ति देने की प्रतिज्ञा की है(इफिसियों 3:20)। उसने प्रतिज्ञा दी है कि हमारी परीक्षाएं हमारे सहने से बाहर कभी नहीं होंगी (1 कुरिन्थियों 10:13)। उसने सब कुछ जो होता है इस प्रकार चलाने का वायदा किया है, जिससे सब कुछ हमारी भलाई के लिए हो (रोमियों 8:28)। तौ भी आमतौर पर ऊंचा उठाए जाने और जीवन की समस्याओं से नीचा किए जाने के बीच का अन्तर *व्यवहार* की बात है (TYF)। इसे और तरह से कहें तो ऊपर दी गई प्रतिज्ञाओं पर *विश्वास* करने वाला मसीही व्यक्ति (TYF) जीवन के तूफ़ानों का सामना करते हुए बच निकलता है और जो उन पर विश्वास नहीं करता उसे उन्हीं तूफ़ानों द्वारा निगल लिया जाता है।

मेरी बात को समझने के लिए, सामान्य कठिनाइयों और विशेषकर मृत्यु के प्रति पौलुस प्रेरित के व्यवहार (TYF) पर विचार करें:

> इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारा पल भर का हलका सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।
>
> क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर हमें ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है (2 कुरिन्थियों 4:16-5:1)।

जबकि इस प्रेरित को मृत्युदण्ड दिया जा चुका था, तो उसने कहा:

> क्योंकि अब मैं अर्घ की नाईं उंडेला जाता हूं, और मेरे कूच का समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने

विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, वरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं (2 तीमुथियुस 4:6-8)।

डोनल्ड बार्नहाउस नामक एक प्रचारक की पत्नी की तीस वर्ष में कैंसर से मृत्यु हो गई, अपने पीछे वह कई छोटे-छोटे बच्चे छोड़ गई। जब बार्नहाउस और उसके बच्चे जनाज़े के लिए जा रहे थे तो उनके पास से एक बड़ा ट्रक गुज़रा जिसकी परछाई उनकी कार पर पड़ी। उसने अपनी बेटी से पूछा, ''आप इस ट्रक से कुचले जाना पसंद करेंगे या इसकी परछाई के नीचे?'' लड़की ने उत्तर दिया, ''बेशक परछाई के नीचे! परछाई से आपको चोट नहीं लग सकती।'' उस व्यक्ति ने सिर हिलाते हुए कहा, ''आपकी मां को मृत्यु ने नहीं बल्कि केवल मृत्यु की परछाई ने कुचला है।'' जनाज़े पर उसने भजन संहिता 23:4क से वचन सुनाया: ''चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है।''[30]

पौलुस की हालत श्री बार्नहाउस जैसी ही होगी। इस प्रेरित पर मुहर लगी हुई थी (TYF) यानी वह सुरक्षित था (TYF)। कोई भी व्यक्ति जिसका व्यवहार ऐसा है (TYF) दु:खी नहीं हो सकता!

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में से ऐसी ही बात को लेकर मैं प्रकाशितवाक्य 7 में वर्णित मुहर से अपने विचार को एक कदम आगे बढ़ाना चाहता हूं। (1) यूहन्ना द्वारा प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय इससे भी भयंकर सताव आने वाला था (उदाहरण के लिए, देखें 3:10)। इस कारण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक मसीही लोगों को उस सताव में से सुरक्षित निकलने में सहायता के लिए लिखी गई थी (देखें 2:10)। (2) प्रकाशितवाक्य 7 में पृथ्वी पर प्रचंड आंधियां भेजी जाने वाली थीं। इसलिए मसीही लोगों पर मुहर लगा दी गई थी ताकि वे आने वाले खतरनाक दिनों में बचे रहें। पूरी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का उद्देश्य आने वाली समस्या से परमेश्वर के लोगों को मुहर करना/बचाना था।

यदि घबराए हुए मसीही प्रकाशितवाक्य में दिए गए सिद्धान्तों को पकड़े रखते[31] और उन्हें अपनी सोच (TYF) और अपने जीवनों में बसा लेते तो विनाश की किसी आन्धी ने उनका कुछ नहीं बिगाड़ना था। मेरा विश्वास है कि प्रकाशितवाक्य की यह शृंखला आपके लिए परमेश्वर की ''मुहर लगने'' की प्रक्रिया का भाग हो सकती है जो कुछ भी यह पुस्तक सिखाती है, उसे सीख कर अपने मन में जमा कर लें (TYF)!

परमेश्वर के पास सुरक्षित लोगों की सूची है: वह अपनों को पहचानता है (7:4-8)

इस अध्ययन को समाप्त करने का यह बेहतरीन स्थान होगा, परन्तु समाप्त करने के लिए अभी पांच आयतें और, सीखने के लिए एक सबक और है। अन्तिम पांच आयतों को कई लोग इस पुस्तक की अधिक जटिल आयतों में से मानते हैं:

> और जिन पर मुहर दी गई, मैंने उनकी गिनती सुनी,[32] कि इस्राएल की सन्तानों के सब गोत्रों में से एक लाख चौआलीस हजार पर मुहर दी गई। यहूदा के गोत्र में से बारह हजार पर मुहर दी गई; रूबेन के गोत्र में से बारह हजार पर, गाद के गोत्र में से बारह हजार पर। आशेर के गोत्र में से बारह हजार पर; नप्ताली के गोत्र में से बारह हजार पर; मनश्शे के गोत्र में से बारह हजार पर। शमौन के गोत्र में से बारह हजार पर; लेवी के गोत्र में से बारह हजार पर; इस्साकार के गोत्र में से बारह हजार पर। जबूलून के गोत्र में से बारह हजार पर; यूसुफ के गोत्र में से बारह हजार पर और बिन्यामीन के गोत्र में से बारह हजार पर मुहर दी गई (आयतें 4-8)।

कुछ लोग यह ज़ोर देते हैं कि ये आयतें मूल यहूदियों के विषय में हैं।[33] मैं कल्पना करता हूं कि आप इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं *यदि*-

(1) यदि आपको इस्राएल के बारह गोत्रों के बारे में कुछ मालूम न हो।

(2) यदि आपको पता न हो कि उनमें से दस गोत्रों ने मूलत: 722 ई.पू. में[34] और अन्य दो ने 70 ईस्वी में अपनी पहचान खो दी थी।[35]

(3) यदि आपको पता न हो कि, अलग-अलग गोत्रों के अस्तित्व में होने के बावजूद उनके आकार में बहुत अन्तर था।[36]

(4) यदि आप इस तथ्य से अनजान हैं कि प्रभु के लिए अब किसी की जाति या राष्ट्रीयता का कोई महत्व नहीं है। पौलुस ने लिखा है, ''यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिए कि वह सब का प्रभु है; और अपने सब नाम लेने वालों के लिए उद्धार है'' (रोमियों 10:12); ''अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो'' (गलातियों 3:28)। बर्टन कॉफ़मैन ने लिखा है:

> जो कुछ परमेश्वर यहूदियों से करने वाला है उसके बारे में कोई भी बात व्यर्थ, गुमराह करने वाली और [नये नियम की] किसी भी बात के विपरीत है। यहूदी कौम के लिए परमेश्वर की वैसे ही कोई विशेष योजना नहीं है जैसे ईरानियों, डच, अंग्रेज़ों या जापानियों के लिए नहीं है।[37]

इसमें दिए गए बारह गोत्र शारीरिक यहूदियों के नहीं हैं तो फिर किसके हैं? एक आरम्भिक पाठ में मैंने आपसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पुराने नियम की शब्दावली का इस्तेमाल होने पर ''घुमाव'' को देखने के लिए कहा था।[38] देखें अगर आप को प्रकाशितवाक्य में दिए गए गोत्रों की सूची में कुछ असामान्य बात मिल जाए:

> यहूदा, रूबन, गाद, आशेर, नप्ताली, मनश्शे,[39] शिमोन, लेवी, इस्साकार, ज़बलून, यूसुफ, बिन्यामीन।

सूची में सबसे ऊपर यहूदा का होना अजीब लगता है, जो कि आमतौर पर पहिलौठे अर्थात रूबन का स्थान है।[40] इससे भी अधिक असामान्य बात लेवी और यूसुफ का नाम सूची में होना और एप्रैम और दान का नाम न होना है। लेवी याकूब के बारह पुत्रों में से एक था। परन्तु उसकी सन्तान ''याजकीय गोत्र'' थी और उन्हें आमतौर पर बारह गोत्रों में शामिल नहीं किया जाता था (गिनती 18:20-24; यहोशू 13:14)। गोत्रों की गिनती बारह पूरी करने के लिए, यूसुफ के दो पुत्रों एप्रैम और मनश्शे को दो गोत्रों के रूप में गिना जाता था।

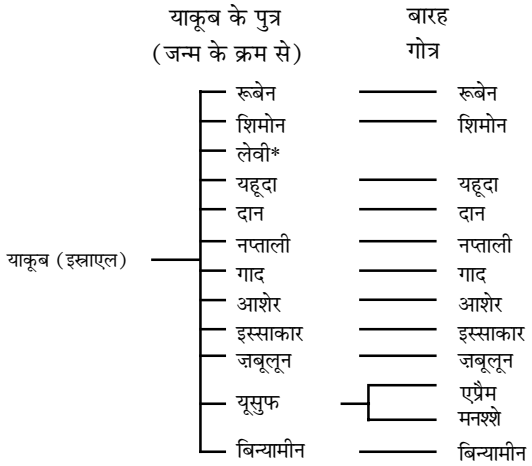

* याजकीय गोत्र होने के कारण, लेवी की संतान को अन्य गोत्रों की तरह भूमि का भाग नहीं दिया गया था।

परन्तु प्रकाशितवाक्य 7 में लेवी को शामिल किया गया है, जबकि याकूब के एक और पुत्र दान का नाम उसमें नहीं है। इसके अलावा एप्रैम की जगह यूसुफ का नाम है।[41] ये महत्वपूर्ण ''घुमाव'' हमें यह बताने के लिए ईश्वरीय तार हैं कि ये पद मूल यहूदियों के बारे *नहीं* हैं।[42]

तो फिर इस पद का क्या अर्थ है? 1 से 3 आयतों के अपने अध्ययन में हमने ज़ोर दिया था कि ये पद *मसीही* लोगों पर मुहर की बात करते हैं। आयत 3 में ''दास'' का अर्थ वही है, जो 1:1 में है। पुस्तक का उद्देश्य सताए जा रहे *मसीही* लोगों को शांति देना है, चाहे वे यहूदी हों या अन्य जाति।[43]

इससे एक और प्रश्न खड़ा होता है कि यदि 4 से 8 आयतें मसीही लोगों के विषय में हैं तो फिर वचन में *यहूदी* गोत्रों के प्रतीक का इस्तेमाल क्यों किया गया?

(1) यह प्रतीक मसीही विचारों और अवधारणाओं के लिए पूरी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यहूदी शब्दावली से मेल खाता है।

(2) यह प्रतीक नये नियम की इस शिक्षा से मेल खाता है कि *कलीसिया आत्मिक इस्राएल है।* प्रकाशितवाक्य 2 और 3 अध्याय उनकी बात करते हैं, ''जो अपने आप को यहूदी कहते हैं और हैं नहीं'' (2:9; 3:9 भी देखें)। इन आयतों का अध्ययन करते हुए हमने ज़ोर दिया था कि यीशु को मसीहा के रूप में *शारीरिक* यहूदियों ने ही ठुकराया था।[44] इस सम्बन्ध में रोमियों 2:28, 29 उद्धृत किया गया था: ''क्योंकि वह असली यहूदी नहीं, जो बाहर से है; और न ही असली खतना बाहरी और शारीरिक है। यहूदी वही है, जो अन्दर से है; सही खतना मन का अर्थात आत्मिक है न कि मांस का ...''(RSV)।

अब यहूदी लोग परमेश्वर के विशेष लोग केवल इसलिए नहीं हैं ''कि वे अब्राहम के वंश के हैं''(रोमियों 9:7; आयत 6 भी देंखें)। बल्कि अब अब्राहम ''*उन सब का* पिता है, जो *विश्वास करते हैं*'' (रोमियों 4:11; गलातियों 3:7, 29 भी देखें)। आज कलीसिया को ''परमेश्वर का इस्राएल'' कहा जाता है (गलातियों 6:16)। ''*सही* खतना'' वे लोग हैं ''जो परमेश्वर के आत्मा की अगुआई से उपासना करते हैं, और मसीही यीशु पर घमण्ड करते हैं'' (फिलिप्पियों 3:3)।

(3) यह प्रतीक इस बात से मेल खाता है कि कलीसिया इस्राएल के लिए परमेश्वर के मूल उद्देश्य को पूरा कर रही है। पुराने नियम में इस्राएल के लिए इस्तेमाल किए गए शब्द अब कलीसिया पर लागू होते हैं। कलीसिया ''पमेश्वर की अपनी सम्पत्ति'' (इफिसियों 1:14; तीतुस 2:14 भी देखें) और परमेश्वर की ''पवित्र प्रजा'' (1 पतरस 2:9) है।

बारह गोत्रों की पहचान कलीसिया के रूप में करने से हर समस्या सुलझ नहीं जाती। अभी भी ''एक लाख चौआलीस हज़ार'' का अंक एक पहेली है (आयत 4)। कुछ लोग यह ज़ोर देते हैं कि इस अंक को अक्षरश: लिया जाए।[45] कुछ लोगों केअनुसार 1,44,000 ''सुपर संतों'' को स्वर्ग में प्रवेश की अनुमति दी जाएगी जबकि हम में से शेष अर्थात ''साधारण'' संतों को मरम्मत की हुई पृथ्वी से संतोष करना पड़ेगा।[46]

अब तक आप को प्रकाशितवाक्य के अंकों के सांकेतिक इस्तेमाल की काफी समझ आ जानी चाहिए ताकि आप ऐसी शिक्षा से गुमराह न हों।[47] ''बारह'' सम्पूर्णता का अंक है, सो ''144'' (बारह का बारह गुणा) ''सम्पूर्णता की सम्पूर्णता'' है। ''एक हज़ार'' सम्पूर्णता के लिए एक और प्रतीक है, इसलिए ''1,44,000'' (144 x 1,000) ''बढ़ी हुई सम्पूर्णता'' का संकेत हैं। अन्य शब्दों में, ''बस यही सब कुछ है; इसके बाद कुछ नहीं!''

तो फिर ''1,44,000'' अंक के इस्तेमाल से हमें क्या पता चलता है? इससे मिलने वाला सबक इतना ही है कि परमेश्वर के *सब* लोगों पर मुहर की गई थी। स्वीकृति और अपनी सन्तान पर सुरक्षा की अपनी मुहर लगाते हुए प्रभु ने किसी एक को भी नहीं छोड़ा यानी उसने सब पर मुहर लगा दी! आइए हम इस सच्चाई को और व्यक्तिगत बनाते हैं: यदि आप राजा की संतान हैं तो आपको नज़रअंदाज़ नहीं किया गया है। आप पर मुहर की जा चुकी है!

यह तथ्य कि परमेश्वर ने किसी को नहीं छोड़ा इस बात का संकेत है कि परमेश्वर अपने लोगों को *जानता* है। अध्याय 14 से यह स्पष्ट हो जाएगा कि संकेत से इसी बड़ी सच्चाई

को हमारे लिए जानना आवश्यक है। अध्याय 14 में 1,44,000 लोग सीनै पर्वत पर मेमने के साथ खड़े हैं, ''जिनके माथे पर *उसका* और *उसके पिता का नाम* लिखा हुआ है'' (14:1ख)। मेरी बाइबल में आरम्भ में मेरा नाम ख़ुदा हुआ है और इससे यह पता चलता है कि यह *मेरी* है किसी और की नहीं।

इस विचार पर हम अध्याय 14 का अध्ययन करते हुए गहराई से खोज करेंगे। अभी के लिए इस बात को संक्षित करने के लिए मैं 2 तीमुथियुस 2:19क का इस्तेमाल करना चाहता हूं ''तौ भी परमेश्वर की पक्की नींव बनी रहती है और उस पर *यह छाप* लगी है: '*प्रभु अपनों को पहचानता है।*''' यदि आप परमेश्वर की संतान हैं तो वह आपको जानता है (देखें नहूम 1:7; यूहन्ना 10:14): वह आपको अन्दर-बाहर से जानता है। वह आपकी सामर्थ और आपकी निर्बलताओं को जानता है। वह आपके मांगने से पहले आप की आवश्यकताओं को जानता है (मत्ती 6:8)। वह आपको इतना निकट से जानता है कि उसे यह भी मालूम है कि आपके सिर पर बाल कितने हैं (मत्ती 10:30)!

फिर मैं कहता हूं कि आप प्रभु के लिए विशेष हैं!

सारांश

1 से 8 आयतें दोबारा पढ़ें (विशेष 1 से 3 आयतें)। इन पदों से आप पर क्या प्रभाव पड़ा है? क्या यह नहीं कि परमेश्वर अपने सेवकों की चिंता करता है, वह उन्हें सुरक्षा देना चाहता है? जहां मैं रहता हूं, वहां हम कई बार ''साईन्ड, सील्ड और डिलिवर्ड'' वाक्यांश का इस्तेमाल करते हैं।[48] इस पाठ में हमने मसीही लोगों को एक *साइन* के रूप में *सील* होते देखा कि परमेश्वर उनके साथ था और उनकी रक्षा करता था। अगले पाठ में हम इसके परिणामस्वरूप मसीही लोगों के *डिलिवर होने* अर्थात छूटने को देखेंगे।

अन्त में मैं पूछता हूं, ''क्या आप पर सील या मुहर लगी है?'' अपने पाठ में हमने ध्यान दिया कि पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा (पानी में डुबकी) लेने पर परमेश्वर लोगों को दान के रूप में अपना आत्मा देता है (प्रेरितों 2:38) और इस सौदे को ईश्वरीय मुहर लगना कहा गया है (इफिसियों 1:13, 14)। यदि आपने नये नियम की शिक्षा के अनुसार अभी तक बपतिस्मा नहीं लिया है तो आप पर मुहर नहीं लगी है; आपको परमेश्वर की सुरक्षा की प्रतिज्ञा नहीं मिली है।

मैंने इस पाठ का आरम्भ एक तूफ़ान का उदारहण देकर किया था। आपने कई तूफ़ान देखें होंगे, भौतिक भी और अभौतिक भी। मुझे आपको मनाने की आवश्यकता नहीं है कि जीवन में आने वाले तूफ़ान खतरनाक हो सकते हैं। जो बात आपके लिए समझनी आवश्यक है, वह यह है कि उसका सामना करने का एकमात्र ढंग परमेश्वर की मुहर का होना है। यदि आपने नये नियम के नमूने के अनुसार अभी बपतिस्मा नहीं लिया है तो मैं आपसे *अभी* बपतिस्मा लेने का आग्रह करता हूं। न तो और प्रतीक्षा करें और न ही हिचकिचाएं![49]

टिप्पणियां

[1]ऐसा ही अन्तराल हमें छठी और सातवीं तुरहियों के बीच मिलेगा। [2]जे. डब्ल्यू. रॉबर्टस, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोक्लिपस),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974), 70. [3]कुछ लोगों का विचार है कि अध्याय 7 वाली आंधियां सात मुहरों विशेषकर सात तुरहियों में दिखाए गए तूफ़ानों *के अलावा* है और यह सम्भव भी है। सात मुहरें और सात तुरहियां मूलतया समानांतर हैं और समय के एक ही काल में हुई हैं (जैसा कि हम देखेंगे), इसलिए यह महत्वहीन है कि हम आंधी को मुहरों या तुरहियों के सम्बन्ध में सोचते हैं या नहीं। कहने का मतलब यह कि मसीही व्यक्ति के जीवन में जब भी और जो भी समस्या आती है, परमेश्वर उसमें उसकी रक्षा करता है! [4]डब्ल्यू. बी. वैस्ट, जूनि. *रैवलेशन थ्रू फर्स्ट सैंचुरी गलासेस,* सं. बॉब प्रिचर्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1997), 69. [5]ये दुष्ट स्वर्गदूत नहीं थे जिनका दुष्ट शक्तियों पर वश था। बल्कि परमेश्वर के वे सेवक थे, जिन्होंने उसकी बात मानी। [6]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''यहां अजगर होंगे!'' पाठ देखें। [7]जब यशायाह ने बिखरे हुओं के ''पृथ्वी की चारों दिशाओं से'' (यशायाह 11:12) इकट्ठा होने की बात की, तो उसके कहने का अर्थ केवल ''हर जगह से'' था (यशायाह 11:11)। एक और उदाहरण यहेजकेल 7:2 है, जहां यहेजकेल ने ''[फलस्तीन के] चारों कोनों'' की बात की। निश्चय ही कोई इस नबी पर यह विश्वास करने का आरोप नहीं लगाएगा कि फलस्तीन आकार में वर्गाकार या आयताकार था। [8]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 590. [9]एच. एल. ऐलिसन, सक्रिप्चर यूनियन बाइबल स्टडी बुक्स सीरीज़, *1 पीटर-क्रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 57. [10]पेड़ों को शामिल करना असामान्य बात है। शायद वे हर प्रकार के वनस्पति जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं, या शायद उनका उल्लेख इसलिए किया गया है क्योंकि तूफ़ान के बाद का सबसे ज़बर्दस्त दृश्य तेज़ आंधी से पेड़ों का गिरना होता है। पेड़ों तथा अन्य बढ़ने वाली चीज़ों का उल्लेख 8:7 और 9:4 में फिर मिलता है।

[11]उदाहरण के लिए, देखें यिर्मयाह 4:11, 12; 23:19; 49:36 और 51:1; KJV. यदि आप के यहां ऐसा मौसम रहता हो जहां तेज़ आंधियां नहीं चलतीं, तो आपको इस रूपक की समझ नहीं आएगी। ज़बर्दस्त आंधी के भीषण आक्रमण से अपने घरों के हिल जाने को महसूस करने वाले लोग समझ जाएंगे कि इस संकेत का कितना जबर्दस्त प्रभाव है। [12]यह वाक्य जी. आर. बिसले-मुर्रे, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंनस पब्लिशिंग कं., 1974), 142 से लिया गया था। बाइबल के छात्रों को यह भी याद होगा कि तम्बू और मन्दिर का मुंह पूर्व की ओर था। [13]मूर्तिपूजकों द्वारा पूजी जाने वाली बेजान मूर्तियों के विपरीत यहोवा को ''जीवित परमेश्वर'' कहा जाता था। [14]होमेर हेली,: *रैवलेशन: एन इन्ट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 202. दस्तावेज़ों को सील करने पर इस पुस्तक में ''मेमना योग्य है'' पाठ देखें। [15]अनुवादित शब्द ''दासों'' के यूनानी शब्द के अर्थ के लिए, *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में 1:1 पर नोट्स देखें। [16]ध्यान में ऐसी ही एक घटना आती है जब परमेश्वर ने विश्वासी लोगों के तैयार होने तक जल प्रलय को रोके रखा था (1 पतरस 3:20)। [17]न ही परमेश्वर हमारे साथ पक्षपात दिखाना चाहता है (देखें याकूब 2:1-9)। [18]परमेश्वर ''हमारी *ओर*'' (रोमियों 8:31) यानी वह हमारे पक्ष में है; वह पूर्व प्रबन्ध के अनुसार हमारे पक्ष में है! [19]परमेश्वर को भाने पर और आयतों के लिए, देखें भजन संहिता 5:12; 30:5; 44:3; 106:4; नीतिवचन 3:4; 8:35; 18:22; गलातियों 1:10. [20]KJV और NASB में ''विशेष'' शब्द केवल कुछ बार ही मिलता है (विशेषकर KJV में देखें व्यवस्थाविवरण 7:6), परन्तु ''पवित्र किए'' और ''पवित्र'' शब्दों में परमेश्वर के लिए ''विशेष'' होने का विचार मिलता है और इन शब्दों को आम तौर पर परमेश्वर के लोगों के लिए ही इस्तेमाल किया जाता है (देखें 1 कुरिन्थियों 6:11; 2 तीमुथियुस 2:21; इब्रानियों 2:11; 10:10; 1 पतरस 1:16; 2:5, 9)।

[21]यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि मुहर से मसीही लोगों को सुरक्षित तो किया गया, परन्तु यह सम्भावना बनी रही कि वे अभी भी गिरकर अविश्वासी हो सकते हैं। वरना प्रकाशितवाक्य में विश्वासी बने रहने की सलाह का कोई महत्व न होता (उदाहरण के लिए, 2:10)। [22]प्रकाशितवाक्य में ''मुहर'' और

''चिह्न'' में अन्तर है; ''चिह्न'' शब्द का इस्तेमाल नकारात्मक अर्थ में किया गया है। यहेजकेल में ''चिह्न'' का इस्तेमाल उसी अर्थ में किया गया है, जिसमें प्रकाशितवाक्य में ''मुहर'' का।[23]पवित्र शास्त्र में, दस्तावेज़ों पर मुहर लगाई जाती थी (1 राजा 21:8), सिंहों की मांद पर मुहर लगाई जाती थी (दानिय्येल 6:17) और यीशु की कब्र पर मुहर लगाई गई थी (मत्ती 27:66)।[24]यह पवित्र आत्मा का *आश्चर्यजनक ढंग से* प्रदर्शन नहीं था (और न ही है)।[25]मसीही लोगों को परेशानी *से* नहीं बल्कि इस *में से* बचाया जाता है।[26]''लोगो'' ''आसान और पक्की पहचान के लिए बनाया गया नाम, प्रतीक या ट्रेडमार्क'' होता है।[27]प्रकाशितवाक्य में ''जीवते परमेश्वर की *मुहर* '' और ''पशु की *छाप* '' में अन्तर किया गया है (16:2; 19:20)। छाप मनुष्य को रोम के अत्याचारों से बचाने के लिए हो सकती है, परन्तु मनुष्य को परमेश्वर के क्रोध से केवल मुहर ही बचा सकती थी। [28]एम. रॉबर्ट मुल्होलैंड, जूनि. *रैवलेशन: होली लिविंग इन एन अनहोली वर्ल्ड,* फ्रांसिस एसबरी प्रैस कमैंटरी, सामा. संस्क. एम. रॉबर्ट मुल्होलैंड जूनि. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: फ्रांसिस एसबरी प्रैस, 1990), 181 [29]इन छोटी-छोटी डिब्बियों को जिन में आयतें लिखी होती थीं, ''ताबीज़'' कहा जाता था। मत्ती 23:5 में यीशु ने इस व्यवहार पर रोशनी डाली।[30]यह उदाहरण बिली ग्राहम, *अप्रोचिंग हूफबीट्स: द फ़ोर हॉर्समैन ऑफ़ द अपोकलिप्स* (न्यू यॉर्क: एवन बुक्स, 1985), 210.

[31]आपको चाहिए कि इस मूल सिद्धांत सहित कि ''यदि हम परमेश्वर की ओर रहते हैं तो जीत हमारी होगी!'' उन में से कुछ सच्चाइयों पर विचार करें।[32]यूहन्ना ने 1,44,000 की गिनती स्वयं नहीं की; बल्कि उसे यह संख्या *बताई गई।* अगले पाठ में इसके महत्व की ओर ध्यान दिलाया जाएगा।[33]बहुत से प्रीमिलेनियलिस्ट (और कुछ अन्य) यह कहते हैं कि वे यहूदी ही हैं। ये लोग आम तौर पर यह मानते हैं कि 1,44,000 लोग यहूदी ही हैं, जबकि 9 से 17 आयतों वाली अनगिनत भीड़ अन्यजाति लोग हैं। जैसा कि हम देखेंगे, हर समूह में यहूदी और अन्यजाति *दोनों* थे।[34]722 ई. पू. में, अश्शूरी इस्राएल के उत्तरी गोत्रों पर चढ़ाई करके कई इस्राएलियों को ले गए। यह कुछ गुटों द्वारा प्रचार किए जाने वाले ''दस खोए हुए गोत्रों'' के विचार को मान्यता नहीं देता। *बचे हुए* दस गोत्र बने रहे यह इस बात से स्पष्ट है कि यहूदियों के बाबुल की दासता से वापस आने पर सभी बारह गोत्रों के लिए बलिदान चढ़ाए जाते थे (उदाहरण के लिए, देखें एज्रा 6:17)। बचे हुए ये लोग इस्राएल के मूर्तिपूजा में चले जाने पर शायद यहूदा के दक्षिण में चले गए थे।[35]70 ईस्वी में, रोमियों द्वारा यरूशलेम को नष्ट कर दिया गया था और वंशावलियों का इतिहास खो गया था। आज किसी यहूदी को यह मालूम नहीं है कि वह किस गोत्र से है।[36]यह कैसे हो सकता है कि उतनी ही गिनती (12,000) हर गोत्र में से परिवर्तित होगी![37]बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 154. [38]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''यहां अजगर होंगे'' पाठ में ''घुमाव'' पर कही मेरी बात पर विचार करें।[39]यह न समझ पाने के कारण कि यह सूची जान बूझकर पुराने नियम की सूचियों से अलग रखी गई है, कुछ लोगों ने आयतों को नये सिरे से क्रमबद्ध करने सहित इस सूची में ''सुधार'' करने की बड़ी चतुराई की है। दान का नाम सूची में नहीं है, जिस कारण अनुमान लगाते हैं कि यहां मूल हस्तलिपि में ''दान'' था, परन्तु प्रतियां बनाने वाले कुछ लोगों ने इसे ''मनुष्य'' कर दिया जो बाद में बिगड़ कर ''मनश्शे'' हो गया। वचन में ऐसे कथित ''सुधारों'' के समर्थन में कोई सबूत नहीं है।[40]देखें उत्पत्ति 35:22-26; गिनती 13:4-15; व्यवस्थाविवरण 33:6-29. कुछ लोगों का विचार है कि यहूदा का नाम पहले इसलिए आया क्योंकि यीशु इसी गोत्र में से आया था (प्रकाशितवाक्य 5:5)।

[41]दान और ऐप्रैम के नाम न होने पर लोग अपने-अपने अनुमान लगाते हैं। कइयों का मानना है कि ये दोनों गोत्र अन्य गोत्रों की अपेक्षा मूर्तिपूजा में अधिक लिप्त थे। अन्य लेखक उत्पत्ति 49:17 के आधार पर दान के बारे में रब्बियों के पुराने अंधविश्वास को बताते हैं। हमें नहीं मालूम कि इस बात का कि इन दोनों गोत्रों को सूची में क्यों नहीं दिया गया *कोई* महत्व है या नहीं।[42]इस बात पर विस्तृत चर्चाओं में से एक रेअ समर्स, *वरदी इज़ द लैम्ब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 146-51 में है।[43]1,44,000 मसीही लोगों को कहा गया है यानी *किसी भी* मसीही को, न कि केवल *शहीद हुए* मसीहियों को। यह कहना आवश्यक है क्योंकि कुछ मसीही लोग यह मानने लगे थे कि शहीद होना बहुत विशेष बात है। इस पर कॉफ़मैन की टिप्पणी ध्यान देने योग्य है: ''शहीद का मुकुट केवल एक संकल्प और शौर्यपूर्ण काम से जीता जा सकता है (और सचमुच यह महिमा से

भरा है); परन्तु ऐसे ही, और उतना ही कठिन जीवन भर सच्चे मसीही के विरुद्ध की जाने वाली किसी भी घृणा को, जो अन्त में प्राकृतिक के कारणों से हो, धैर्य से सहना भी मुकुट जीतना ही है'' (कॉफ़मैन, 158)। [44]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे की पुस्तक,* ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''निर्धन कलीसिया जो धनी थी'' पाठ में 2:9 पर टिप्पणियां देखें। [45]सैवंथ डे एडवेंटिस्ट में पहले यह सिखाया जाता था कि स्वर्ग में अन्ततः केवल 1,44,000 ही उद्धार पाएंगे। जब उनकी कुल सदस्यता इतनी हो गई, तो उन्होंने इस शिक्षा को छोड़ दिया। अन्य छोटे-छोटे धार्मिक गुट आज भी यही सिखाते हैं। इसके मुख्य प्रस्तावक यहोवा विटनेस वाले रहे हैं जो यह दावा करते हैं कि स्वर्ग में केवल 1,44,000 ही होंगे। (देखें एड सैंडर्स, ''रैवलेशन एण्ड द कल्टस,'' हार्डिंग यूनिवर्सिटी लैक्चर्स [1992]: 250.)। मुझे बताया गया है कि काले मुस्लिमों ने अब इन पदों को अपना लिया है और सिखाते हैं कि स्वर्ग में काले लोग ही होंगे। [46]बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर के *हर* विश्वासी बालक को ''एक अविनाशी, और निर्मल और अजर मीरास'' मिली है ''जो *स्वर्ग में* रखी है'' (1 पतरस 1:4)। [47]संख्याओं के सांकेतिक इस्तेमाल पर आप को अपनी स्मरण शक्ति ताज़ा कर लेनी चाहिए। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' में ''यहां अजगर होंगे!'' पाठ देखें। विशेषकर ''12,'' ''1,000'' ''144,'' और ''1,44,000'' पर टिप्पणियां देखें। [48]''हस्ताक्षरित, मुहर किया हुआ और बांट दिया गया'' दस्तावेज़ मानने योग्य हो जाता है। किसी भी चीज़ को जिसे हम ''हस्ताक्षरित, मुहर की हुई और बांट दी गई'' कहें, उसे *पक्का* माना जाता है। [49]यदि इसका इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है, तो आपको चाहिए कि अविश्वासी मसीहियों को विश्वास में वापस आने के लिए प्रोत्साहित करें (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16)।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. अध्याय 6 के शब्दों को पढ़ने पर उठने वाले सवालों में से अध्याय 7 किन सवालों का जवाब देता है?
2. ''चार'' अंक के सांकेतिक अर्थ की व्याख्या करें।
3. वे चार हवाएं कौन सी थीं, जिन पर नज़र रखी गई थी?
4. वे दास कौन थे, जिन पर मुहर लगाई जानी थी?
5. किस अर्थ में परमेश्वर पक्षपाती नहीं है? किस अर्थ में परमेश्वर पक्षपाती है?
6. मुहर या सील के तीन उद्देश्य बताएं।
7. बपतिस्मा और मसीही व्यक्ति पर आत्मिक मुहर में सम्बन्ध बताएं।
8. पाठ के अनुसार इस बात का क्या महत्व है कि मसीही लोगों के *माथों* पर मुहर लगी थी।
9. बारह गोत्र किस बात का प्रतीक हैं?
10. 1,44,000 अंक का महत्व बताएं।
11. आपके लिए प्रकाशितवाक्य 7:1-8 से सबसे महत्वपूर्ण पाठ क्या है।

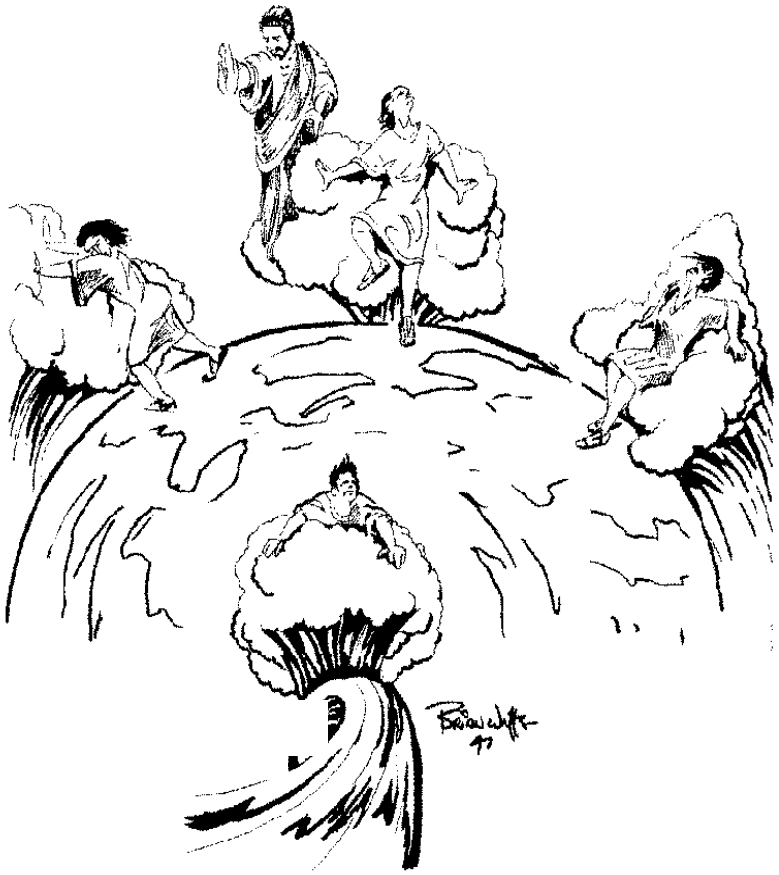

पृथ्वी की चारों हवाओं को पकड़े हुए चार स्वर्गदूत (7:1)

परमेश्वर के दास पर मुहर लगाता एक स्वर्गदूत (7:3)